A0705027

प्रश्न सं० - 50

सामाजिक अनुसंधान में कम्प्यूटर (computer) के प्रयोग एवं महत्व को स्पष्ट करें?

उत्तर - पहले कभी यह माना जाता था कि यदि सामाजिक अनुसंधान द्वारा संकलित सामग्री को विश्लेषित करने में परिशुद्ध प्रविधियों को लागू किया जाए तो इसकी गुणवत्ता समाप्त हो जाती है। अब इस विचारधारा को नकार कर सामाजिक यथार्थता को समझने हेतु जिन सर्वेक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया जाने लगा है उनसे सामग्री के गणितीय विश्लेषण एवं कम्प्यूटर द्वारा विश्लेषण को महत्व मिला है।

सामाजिक अनुसंधान में कम्प्यूटर के प्रयोग को अनेक कारणों ने सहायता प्रदान की है। इनमें से प्रमुख निम्न प्रकार हैं -

(i) तीव्र गति (High speed)
(ii) परिशुद्धता (Accuracy)
(iii) सार्वभौमिकता (Universality)
(iv) स्वचालन (Automation)
(v) क्षमता (Capacity)
(vi) संग्रहण क्षमता (Storage capacity)

कम्प्यूटर संख्यात्मक, एवं तार्किक संक्रियाओं को करने का एक अद्भुत इलेक्ट्रानिक उपकरण है। सामाजिक विज्ञानों के लिए जो सांख्यिकी पैकेज विकसित किए गए हैं उनसे अनुसंधान सामग्री का विश्लेषण करना अत्यन्त सरल हो गया है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:52

A0705027

प्रश्न सं०-49

क्रिया (क्रियात्मक) अनुसंधान से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- क्रिया अनुसंधान (Action Research) एक ऐसा व्यावहारिक अनुसंधान है जिसका उद्देश्य किसी सामाजिक समस्या का वस्तुनिष्ठ आधार पर तत्काल समाधान खोजना है। एस०एम० कोरे (S.M. Corey) इस प्रकार के अनुसंधान के प्रबल समर्थक माने जाते हैं। इस प्रकार का अनुसंधान सैद्धांतिक प्रकृति का न होकर व्यावहारिक प्रकृति का होता है। आजकल व्यावसायिक संगठनों द्वारा किये जाने वाले अधिकतर अनुसंधान इसी प्रकार की श्रेणी के अनुसंधानों के उदाहरण हैं।

यह वह सामाजिक अनुसंधान है जिसमें अनुसंधान कर्ता किसी सामाजिक समस्या या घटना के क्रियात्मक पक्ष को अधिक महत्व देता है तथा अनुसंधान के निष्कर्षों का प्रयोग वर्तमान परिस्थितियों जैसे - गन्दी बस्तियों (स्लम), जातीय तनावों, पर्यावरण क्षरण, पारिस्थितिकीय असंतुलन, अनियोजित नगरीकरण, औद्योगिक प्रदूषण, या अन्य ऐसी परिस्थितियों को परिवर्तित करने हेतु करता है। क्रियात्मक अनुसंधान सामाजिक समस्याओं के निदान हेतु सुझाव मात्र ही नहीं वरन सक्रिय रूपरेखा भी प्रस्तुत करते हैं।

vivo V29e

A070S027

प्रश्न सं०-48

त्रिभुजन प्रविधि से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें?

उत्तर- त्रिभुजन (Triangulation) सामाजिक अनुसंधान में अपेक्षाकृत एक नवीन घटना है। पिछले दो दशकों में ही एक ही अनुसंधान में "गुणात्मक एवं परिमाणात्मक" सामग्री के सम्मिश्रण की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसी के परिणाम स्वरूप त्रिभुजन का विकास हुआ है। यह एक तकनीकि शब्द है जिसका प्रयोग उस प्रविधि के लिए किया जाता है जिसमें दो ज्ञात अथवा अवलोकनीय बिंदुओं का प्रयोग तीसरे बिंदु का स्थान निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

आर०एल० फोस्टर ने अवधारणात्मक त्रिभुजन की प्रक्रिया को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया है—

(i) अध्ययनरत विषय से सम्बंधित गुणात्मक एवं परिमाणात्मक अनुसंधानों की प्रत्येक पद्धति की निदर्शनात्मक मान्यताओं के अनुरूप करना।

(ii) प्रत्येक पद्धति संबंधी प्रासंगिक निष्कर्षों में भेद करना।

(iii) निष्कर्षों में विश्वास को ज्ञात करना।

(iv) अवधारणात्मक प्रतिरूप में निष्कर्षों को सम्मिलित करने संबंधी आधारों का विकास करना।

(v) एक या अधिक प्रतिरूपों का निर्माण करना।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:52

A070502T

प्रश्न सं० – 47
वृहत - आँकड़ों के रूप में जनगणना (Census) का क्या महत्व है, स्पष्ट करे?

उत्तर– जनगणना को वृहत-आँकड़ों का एक प्रमुख सामाजिक प्रलेख माना जाता है। जनगणना रिपोर्ट के आधार पर देश की भावी सामाजिक-आर्थिक नीति का निर्माण किया जाता है। जनगणना से जनसंख्या के बारे में जो आँकड़े उपलब्ध होते है उनसे देश में निम्नलिखित सूचनायें मिलती है–

- जनसंख्या वृद्धि (जन्मदर / मृत्यु दर)
- जनसंख्या घनत्व
- लिंगानुपात (M/F)
- साक्षरता दर (भाषा / लिपि / पठन / वाचन)
- नागरिकों की औसत आयु
- विभिन्न धर्मावलम्बियों का अनुपात (अल्पसंख्यक)
- निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत
- नागरिकों की वैवाहिक स्थिति
- कर्मियों एवं गैर-कर्मियों का विवरण
- व्यावसायिक संरचना
- भूमि संबंधी जानकारी एवं अन्य पहलू

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि जनगणना रिपोर्ट अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी प्रकाशन है जो कि जनसंख्या से संबंधित विविध प्रकार के आँकड़े उपलब्ध कराता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2025, 20:02

A070502T

प्रश्न सं०-46

सामाजिक सर्वेक्षण का क्षेत्र एवं विषयवस्तु को स्पष्ट करे?

उत्तर- सामाजिक सर्वेक्षण ने दो तथ्यों एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला है। जो निम्न लिखित है—

(i) सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में रुचि

(ii) सामाजिक घटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन की सम्भावना

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रमाण काफी प्राचीन काल से प्राप्त होते रहे हैं। हेरोडोटस ने मिस्र के समाज का सर्वेक्षण किया वहीं कौटिल्य ने भारतीय समाज का। इससे सर्वेक्षण विधि के प्राचीन काल का संबंध पता चलता है।

सामाजिक सर्वेक्षण का आयोजन एवं चरण —

- समस्या का चयन
- सर्वेक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण
- अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण
- प्रारम्भिक तैयारियाँ
- निदर्शन का चुनाव
- सर्वेक्षण का संगठन

सामाजिक सर्वेक्षण के गुण —

- परिमाणात्मक सूचनाएं
- गुणात्मक सूचनाएं
- वैज्ञानिक परिशुद्धता
- वस्तुनिष्ठता
- उपकल्पना का निर्माण एवं परीक्षण

vivo V29e

A0705027

प्रश्न सं० - 45

निगमन तर्क (Deductive Logic) क्या है, स्पष्ट करें?

उत्तर— आगमन तर्क के पूर्णतः विपरीत पद्धति है अर्थात हम इसमें "सामान्य से विशिष्ट" की ओर चलते हैं। इस पद्धति द्वारा अनुसंधानकर्ता जिन विशिष्ट तथ्यों का पता लगाता है उनका सामाजिक घटना या तथ्यों के संबंधों में प्रचलित सामान्य नियमों के आधार पर अनुमोदन करता है।

सिद्धांत
↓
उपकल्पना
↓
अवलोकन
↓
प्रमाणीकरण

मनुष्य मरणशील है
राम एक मनुष्य है
अतः राम मरणशील है

निगमन तर्क को "ऊपर से नीचे" (Top-down) उपागम भी कहा जाता है। इसमें हम अपनी रुचि के किसी सिद्धांत के बारे में सोच से प्रारम्भ होकर उपकल्पनाओं का निर्माण करते हैं तथा इन्हें अवलोकनों के रूप में सीमित कर देते हैं। अंतिम रूप में उपकल्पनाओं का परीक्षण किया जाता है ताकि मूल सिद्धांत का प्रमाणीकरण हो सके।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:51

A0705027

प्रश्न सं० - 44

आगमन तर्क (Inductive Logic) क्या है, स्पष्ट करे?

उत्तर — आगमन तर्क, तर्क की वह पद्धति है जिसमें अनुसंधानकर्ता कुछ विशिष्ट तथ्यों के आधार पर सामान्य तथ्यों का निरूपण करता है, अर्थात इसमें "विशिष्ट से सामान्य" की ओर बढ़ने का प्रयास किया जाता है।

सिद्धांत
↑
काल्पनिक उपकल्पना
↑
प्रतिमान
↑
अवलोकन

राम मरणशील है,
राम एक मनुष्य है,
अतः मनुष्य मरणशील है

आगमन तर्क को "नीचे से ऊपर" (Bottom up) उपागम भी कहा जाता है। इसमें क्योंकि नित्यप्रति के निरीक्षणों एवं अनुभवों या भूतकाल की घटनाओं के क्रम के आधार पर सामाजिक नियमों का प्रतिपादन किया जाता है, अतः अनेक विद्वान इस पद्धति को आनुभाविक पद्धति या ऐतिहासिक पद्धति के नाम से भी जानते हैं। परंतु इसे आगमन पद्धति का नाम देना ही अधिक उचित है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:51

A0705021

प्रश्न सं० - 43

गुणात्मक अनुसंधान में पद्धतिशास्त्रीय दुविधा एवं मुद्दे क्या है, प्रकाश डालिये?

उत्तर – सामाजिक घटनायें प्राकृतिक घटनाओं से इस दृष्टि से भिन्न होती है कि उनका परिमाणात्मक माप सम्भव नही है, इसलिए परिमाणात्मक अध्ययन भी सम्भव नही है। सामाजिक घटनाओं का केवल गुणात्मक अध्ययन ही किया जा सकता है। गुणात्मक अनुसंधान की निम्नलिखित दुविधायें एवं मुद्दे है –

(i) सामाजिक घटनाओं के केन्द्रबिंदु में मानवव्यवहार है, जो एक जटिल संरचनाओं का निर्माण करता है।

(ii) सामाजिक घटनाओं में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग एक सीमा तक ही हो सकता है।

(iii) मानवीय मनोभावों, मनोवृत्तियों, विचारों का मापन सम्भव नहीं है।

(iv) सामाजिक घटनाओं में परिमाणात्मक मापों का प्रयोग वह परिशुद्धता नहीं दे पाता जो भौतिक विज्ञानों में संभव है।

(v) सामाजिक घटनाओं की प्रकृति परिवर्तनशील है, जो एक अन्य समस्या है।

(vi) सामाजिक घटनाओं की व्यक्तिनिष्ठता एवं अमूर्तता इनके परिमाणात्मक अध्ययन को कठिन बना देती है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:51

प्रश्न सं०- 42

साक्षात्कार की प्रक्रिया के प्रमुख चरण कौन से है, वर्णन करे?

उत्तर- साक्षात्कार की सम्पूर्ण प्रक्रिया को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) साक्षात्कार की प्रारम्भिक तैयारी

- समस्या का ज्ञान
- उत्तरदाताओं का चयन
- उत्तरदाताओं के बारे में प्रारम्भिक जानकारी
- साक्षात्कार के लिए समय एवं स्थान का निर्धारण
- साक्षात्कार यंत्र की रचना

(ii) साक्षात्कार की मुख्य प्रक्रिया

- सूचनादाताओं से सम्पर्क स्थापित करना
- उद्देश्य बताना
- सहयोग याचना
- साक्षात्कार का प्रारम्भ
- अन्वेषक एवं बचाव वाले प्रश्न
- उत्साहवर्धन तथा पुनः स्मरण
- संतुलन बनाये रखना
- साक्षात्कार अभिलेखन

(iii) साक्षात्कार का समापन एवं प्रतिवेदन

प्रतिवेदन निश्चय ही सूचनादाता के बाहरी व्यवहार का वर्णन मात्र नहीं अपितु यह उसके व्यवहार, उसके जीवन की योजना तथा वर्तमान समस्या के प्रति उसकी मनोवृत्ति के जीवन इतिहास पर भी प्रकाश डालता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:51

A0705021

प्रश्न सं०-4१

साक्षात्कार के प्रमुख प्रकारों का उल्लेख करे?

उत्तर- साक्षात्कार के कितने प्रकार है यह बताना एक जटिल कार्य है। मुख्य आधारों पर साक्षात्कार का वर्गीकरण निम्नलिखित है-

(i) उत्तरदाताओं की संख्या के आधार पर वर्गीकरण
- व्यक्तिगत साक्षात्कार
- सामूहिक साक्षात्कार

(ii) उद्देश्यों के आधार पर वर्गीकरण
- निदानात्मक साक्षात्कार
- उपचारात्मक साक्षात्कार
- अनुसंधानात्मक साक्षात्कार

(iii) सम्पर्क के आधार पर वर्गीकरण
- प्रत्यक्ष साक्षात्कार
- अप्रत्यक्ष साक्षात्कार

(iv) पद्धतिशास्त्र के आधार पर वर्गीकरण
- केन्द्रित साक्षात्कार
- गैर-निर्देशित साक्षात्कार
- पुनरावृत्ति साक्षात्कार

(v) संरचना के आधार पर वर्गीकरण
- मतदान प्रकार का साक्षात्कार
- खुला साक्षात्कार
- अप्रतिबंधित साक्षात्कार

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:51

X0705021

प्रश्न सं०-40

सामूहिक अवलोकन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- व्यक्तिगत अवलोकन (अनियंत्रित एवं नियंत्रित अवलोकन) की सीमाओं को दूर करने के लिए आजकल सामाजिक अनुसंधानों में सामूहिक अवलोकन (Group Observation) पद्धति का प्रयोग किया जाने लगा है।

अमेरिका तथा इंग्लैण्ड में सामूहिक अवलोकन प्रविधि को अधिक मान्यता मिल पाई है। सिन पाओ यंग (Hsin Pao Yang) के अनुसार सामूहिक अवलोकन नियंत्रित एवं अनियंत्रित अवलोकनों का एक मिश्रित एवं मध्यवर्ती रूप है, जिसमें अवलोकनकर्ताओं का एक दल मिलकर घटना के बारे में सामग्री एकत्रित करता है और बाद में सब मिलकर एकमत से उस पर विचार-विमर्श करते हैं।

यह प्रविधि वास्तव में विभिन्न सामाजिक विज्ञानों में बढ़ते हुए सहयोग का प्रतीक है तथा अन्तर-विषयक दृष्टिकोण को अधिक महत्व देता है। अधिक अवलोकनकर्ता होने के कारण यह प्रविधि अवलोकन को सरल ही नहीं बना देती अपितु विश्वसनीयता, उपयोगिता एवं सत्यापन की सुविधाएं भी अधिक प्रदान करती है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

20.10.2021

प्रश्न सं०-39

अर्द्ध-सहभागी अवलोकन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- अर्द्ध-सहभागी अवलोकन (Quasi-Participant Observation) भी अनियंत्रित अवलोकन का ही एक प्रकार है। क्योंकि पूर्ण रूप से व्यावहारिक जीवन में सहभागिता अथवा असहभागिता सम्भव नहीं है। गुडे एवं हट (Goode and Hatt) ने इन दोनों प्रविधियों के समन्वित रूप एवं मध्यवर्ती मार्ग के अनुसरण करने पर बल दिया है। जिसे अर्द्ध-सहभागी अवलोकन कहा जाता है। इस प्रकार के अवलोकन में अवलोकनकर्ता समूह के दैनिक जीवन में भी भाग लेता है और अनेक विशेष परिस्थितियों में वह एक तटस्थ दर्शक बन जाता है। यह प्रविधि अधिक व्यावहारिक एवं सरल मानी जाती है।

गुडे एवं हट (Goode and Hatt) का कहना है कि व्यक्ति के लिए सहभागी या असहभागी में से किसी एक रूप को पूर्णतः धारण करने की अपेक्षा इन दोनों कार्यों की साथ-2 पूर्ति करना ही अधिक सुगम होता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

AO70S021

प्रश्न सं०-38

एक अनुसंधान समस्या का चयन एवं निरूपण की व्याख्या करे?

उत्तर— उदाहरण के लिए सतीश सबरवाल की संकलित पुस्तक "ग्राम से परे" (Beyond the Village) में वर्णित योगेश अटल के "प्रोजेक्ट क्लैप" (Project CLAPP) नामक अध्ययन में जो "संचार स्तर एवं राजनीतिक सहभागिता" का अध्ययन है। योगेश अटल ने अपने इस शोध पत्र में अन्वेषणात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया है, जिसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है-

(i) अध्ययन की समस्या

(ii) उपकल्पनाएं — समुदाय एवं व्यक्तियों के संदर्भ में

(iii) क्षेत्र का चुनाव — लघु समुदाय
— सम्पर्क समुदाय
— केन्द्रों का केन्द्र समुदाय

(iv) चुनाव की विधि

(v) निदर्शन (Sampling)

(vi) तथ्य संकलन की प्रविधियाँ

(vii) तथ्यों का विश्लेषण

योगेश अटल के इस शोध पत्र की अध्ययन पद्धति से स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रकार यह अध्ययन गाँव तक सीमित न हो कर पूरे चुनाव क्षेत्र को इकाई मानता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

A0705021

प्रश्न सं०-37

सामाजिक अनुसंधान की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालिए?

उत्तर- सामाजिक अनुसंधान (Social Research) एक जटिल प्रक्रिया है। लगता तो ऐसा है कि अनुसंधान करना अत्यधिक सरल कार्य है, परंतु जब हम सामाजिक अनुसंधान की प्रस्तावना बनाना प्रारम्भ करते हैं तो हमें पता चलता है कि यह कार्य कितना कठिन है। समाज विज्ञानों के नियम प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों की तरह अटल नहीं होते, वे तो सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में सम्भावित प्रवृत्ति को प्रकट करते हैं। सामाजिक अनुसंधान की 5 प्रमुख समस्यायें हैं—

(i) समस्या का चयन सदैव मूल्य-निर्णयों द्वारा प्रभावित होता है।

(ii) सामाजिक अनुसंधान में तटस्थता रख पाना संभव नहीं है।

(iii) अनुसंधानकर्ता के बाह्य हित व्यक्तिनिष्ठता को प्रोत्साहन देते हैं।

(iv) सामाजिक घटनाओं की गुणात्मक प्रकृति परिशुद्ध एवं यथार्थ रूप से घटनाओं के अध्ययन में एक बाधा है।

(v) अनुसंधान कर्ता के नैतिक मूल्य अनुसंधान को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

A0705027

प्रश्न सं0-36

सामाजिक अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिये?

उत्तर— सामाजिक अनुसंधान आज के युग में दैनिक जीवन का एक अंग बन गया है क्योंकि सामाजिक जीवन अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। इसमें धन एवं समय दोनों ही लगते हैं परंतु फिर भी अधिकाधिक लोग अनुसंधान कार्यों में रुचि लेने लगे हैं। इसका कारण सामाजिक अनुसंधान का बढ़ता हुआ महत्व है।

सामाजिक अनुसंधान को निम्नलिखित बातों से उसके महत्व को स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) अज्ञानता और अन्धविश्वास को मिटाने में सहायक

(ii) ज्ञान के विकास में सहायक

(iii) समाज के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायक

(iv) सामाजिक समस्याओं के निष्पक्ष विश्लेषण में सहायक

(v) सामाजिक कल्याण में सहायक

(vi) भविष्यवाणी करने में सहायक

(vii) सामाजिक नियंत्रण में सहायक

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

20705021

प्रश्न सं0-35

प्राथमिक सामग्री (Primary Data) से आप क्या समझते है?

उत्तर—

आनुभाविक अनुसंधान (Empirical Research) का आधार केवल अनुभव अथवा अवलोकन होता है। यह एक प्रकार से प्राथमिक सामग्री पर आधारित अनुसंधान है, जिसमें जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं उनका अवलोकन अथवा प्रयोग द्वारा पुनर्पुष्टिकरण किया जा सकता है। इस प्रकार के अनुसंधान में प्राथमिक स्रोतो से तथ्यों का संकलन किया जाता है। प्राथमिक सामग्री उस सामग्री, आँकड़ों या सूचनाओं को कहते हैं जो कि अनुसंधानकर्ता स्वयं प्राप्त करता है। प्राथमिक स्रोतों को कई बार क्षेत्रीय स्रोत भी कहते हैं।

आनुभाविक अनुसंधान क्षेत्राधिकारित अध्ययनों (Field Studies) पर बल देते हैं। इनमें सामाजिक प्रक्रमों को उनके यथावत स्वाभाविक स्वरूप में, अवलोकन तथा परिमापन द्वारा समझने का प्रयास किया जाता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:50

20705027

प्रश्न सं०-34
द्वितीयक सामग्री (Secondary Data) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— द्वितीयक स्रोतों द्वारा एकत्रित सामग्री को द्वितीयक सामग्री कहा जाता है। इसे अनुसंधानकर्ता दूसरे के प्रयोग अथवा अनुसंधान से प्राप्त करता है अर्थात इसे स्वयं अनुसंधानकर्ता संकलित नहीं करता।

"द्वितीयक स्रोत किसी एक ऐतिहासिक घटना अथवा स्थिति से अपने मूल स्रोतों से एक या अधिक चरण दूर हटे हुए होते हैं"

द्वितीयक सामग्री (Secondary Data)

- पक्षपात से बचाव
- भूत कालीन घटनाओं का अध्ययन
- समय एवं धन की बचत
- गोपनीय तथ्यों की प्राप्ति
- असम्भव सूचनाओं का संकलन

व्यक्तिगत प्रलेख
- (i) जीवन इतिहास
- (ii) डायरी
- (iii) पत्र
- (iv) संस्मरण

सार्वजनिक प्रलेख
- (i) सार्वजनिक संगठनों की रिपोर्टें
- (ii) समाचार पत्र
- (iii) पत्रिकायें
- (iv) प्रकाशित आँकड़े
- (v) पुस्तक सूचियाँ

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

A0705021

प्रश्न सं० -33

प्रायोगिक अनुसंधान प्ररचना से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- प्रायोगिक अनुसंधान प्ररचना (Experimental Research Design) प्रयोगशाला में प्रयोग की तरह दो चरों के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए बनायी जाती है। इसमें एक नियंत्रित (Controlled) समूह बनाया जाता है तथा दूसरा प्रायोगिक (Experimental) समूह। नियंत्रित समूह को जैसे वह है वैसे ही रहने दिया जाता है जबकि प्रायोगिक समूह में जिस कारक का प्रभाव देखना है उसका प्रकाशीकरण (Exposure) किया जाता है।

"समाजशास्त्रीय अनुसंधान में प्रायोगिक प्ररचना की अवधारणा नियंत्रण की दशाओं के अन्तर्गत निरीक्षण द्वारा मानवीय सम्बन्धों के व्यवस्थित अध्ययन की ओर संकेत करती है।"

प्रायोगिक अनुसंधान प्ररचना की तीन श्रेणियाँ-

(i) केवल पश्चात परीक्षण

(ii) पूर्व पश्चात परीक्षण

(iii) कार्यान्तर तथ्य परीक्षण

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

A0705021

प्रश्नसं० - 32

वर्णनात्मक अनुसंधान प्रस्चना क्या है, स्पष्ट करे?

उत्तर— वर्णनात्मक अनुसंधान प्रस्चना (Descriptive Research Design) का निर्माण केवल उसी परिस्थिति में किया जाता है, जबकि अध्ययन समस्या के बारे में काफी पूर्व ज्ञान पहले से ही उपलब्ध है। इस प्रस्चना में तथ्यों का संकलन विभिन्न प्रविधियों द्वारा किया गया है जैसे कि साक्षात्कार, प्रश्नावली, विधिवत प्रत्यक्ष अवलोकन, सामुदायिक प्रलेखों का विश्लेषण तथा सहभागी अवलोकन इत्यादि। अनेक प्रविधियों के प्रयोग इसमें किया जाता है।

(i) अध्ययन के उद्देश्यों का निर्माण
(ii) तथ्यों के संकलन की विधियों की प्रस्चना
(iii) निदर्शन का चयन
(iv) सामग्री का संकलन तथा परीक्षण
(v) परिणामों का विश्लेषण

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

A070502T

प्रश्न सं० - 31

अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रस्चना क्या है, व्याख्या करें?

उत्तर — अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रस्चना (Exploratory Research Design) का प्रमुख उद्देश्य अनुसंधान के लिए समस्या का निर्माण करना अथवा अनुसंधान के लिए उपकल्पनाएँ बनाना है। वस्तुतः ये दोनों अनुसंधान के प्रमुख चरण माने जाते हैं। अतः अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रस्चना इनमें सहायता प्रदान करती है। यह एक ऐसी आधारशिला है जो अग्रिम रूप से अनुसंधान की प्राथमिकताओं का पता लगाने में सहायक है अथवा अग्रिम अध्ययन के लिए प्राथमिक खोज प्रदान करने में सहायक है।

उदा० के लिए डॉ० योगेश अटल का "प्रोजेक्ट कल्प" पर लेख, अन्वेषणात्मक अध्ययन है क्योंकि इसे उन्होंने अपने वृहद समाजशास्त्रीय अध्ययन Local Communities and National Politics - 1971 का आधार बनाया है।

"अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रस्चना उस अनुभव को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है जो अधिक निश्चित अनुसंधान हेतु सम्बद्ध उपकल्पना के निरूपण में सहायक होगा"

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

λ070502T

प्रश्न सं० – 30
सामाजिक अनुसंधान में नैतिक मुद्दों का क्या महत्व है स्पष्ट करें?

उत्तर – सामाजिक अनुसंधान में नैतिक मुद्दों का सम्बन्ध अनुसंधानकर्ता के नैतिक कर्तव्यों से है।

नानलिन (NanLin) ने प्रतिवेदन लिखते समय अनुसंधानकर्ता के जिन दायित्वों का उल्लेख किया है उनमें नैतिक उत्तरदायित्व को प्रमुख स्थान दिया है। इनका कहना है कि अनुसंधानकर्ता को प्रतिवेदन तैयार करते समय अपने नैतिक उत्तरदायित्व को ध्यान में रखना चाहिये जिसमें दो बातें प्रमुख हैं — (i) सूचनादाताओं एवं सहयोगियों का संरक्षण
(ii) वास्तविक एवं पूर्ण सूचना

सामाजिक अनुसंधान में निम्नलिखित मुद्दों को प्रमुख माना जाता है —

(i) सूचित स्वीकृति
(ii) विश्वसनीयता
(iii) गोपनीयता
(iv) शारीरिक एवं मानसिक कष्ट से बचाव
(v) प्रायोजित अनुसंधान
(vi) वैज्ञानिक कदाचार एवं धोखा
(vii) वैज्ञानिक समर्थन
(viii) अतिसंवेदनशील सूचनादाता को संरक्षण
(ix) अनुसंधान के उद्देश्यों हेतु उपचार को स्थगित रखना

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

प्रश्न सं० – 29

जनगणना सर्वेक्षण (Census Survey) से आप क्या समझते हैं, इसकी विशद विवेचना करें?

उत्तर— सामाजिक सर्वेक्षण (Social Survey) के एक प्रमुख रूप में हम जनगणना सर्वेक्षण का हम अध्ययन करते हैं। जनगणना सर्वेक्षण एक नियत समयकालिक सूचना व्यवस्था है, जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली पद्धति का समावेश है।

जनगणना सर्वेक्षण

(i) परिमाणात्मक सूचनायें	– जनसंख्यात्मक विशेषतायें
(ii) गुणात्मक सूचनायें	– सामाजिक पर्यावरण
(iii) वैज्ञानिक परिशुद्धता	– सामाजिक क्रियायें
(iv) वस्तुनिष्ठता	– विचार या मनोवृत्ति
(v) विभिन्न जीवन परिस्थितियों का अध्ययन	

जनसंख्या सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को परिमार्जित करके सामाजिक-आर्थिक नीतियों का आधार बनाया जाता है। जनसंख्या सर्वेक्षण का कार्य एक नीतिगत आधार है, जो किसी भी समाज की भविष्य संबंधी योजनाओं से जुड़ा है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

A0705027

प्रश्न सं० - 28

सामाजिक अनुसंधान के तुलनात्मक उपागम से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - तुलनात्मक उपागम (Comparative Approach) को काफी समय से समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र का सर्वोत्तम उपागम समझा जा रहा है। एमिल दुर्खीम पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने इस उपागम का विधिवत प्रयोग अपने "आत्महत्या" के अध्ययन में किया। तुलनात्मक उपागम में दो घटनाओं, परिस्थितियों, संस्थाओं अथवा समाजों इत्यादि की तुलना की जाती है। तुलना के पश्चात जो अन्तर एवं समानताएँ दिखाई देती हैं उनके आधार पर घटनाओं एवं परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया जाता है।

डंकन मिशेल (Duncan Mitchell) के अनुसार तुलनात्मक उपागम उस पद्धति को कहते हैं जिसमें भिन्न-भिन्न समाजों अथवा एक ही समाज के भिन्न-भिन्न समूहों की तुलना करके यह बताया जा सके कि उनमें समानता है अथवा नहीं और यदि है तो क्यों है?

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:49

A0705021

प्रश्न सं०-27

सामाजिक अनुसंधान के ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach) का समाजशास्त्रीय तथा मानवशास्त्रीय अध्ययनों में अनुपम घटनाओं एवं परिस्थितियों को समझने के लिए अनेक विद्वानों ने प्रयोग किया है। इसमें घटनाओं का अध्ययन उनके विषय प्रारम्भिक कारकों का पता लगाकर किया जाता है।

बाटोमोर (Bottomore) के अनुसार ऐतिहासिक व्याख्या का अभिप्राय उन प्रारम्भिक परिस्थितियों का वर्णन करना है जो विशेष घटना को जन्म देती है। इन के अनुसार सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिक व्याख्या ऐतिहासिक व्याख्या के बिना अधूरी है।

ऐतिहासिक उपागम में सामान्यत: ऐतिहासिक सामग्री या द्वितीय क्रम के प्रलेखों से संकलित आंकड़ों का ही प्रयोग किया जाता है, परंतु अनुसंधानकर्ता प्राथमिक आंकड़ों द्वारा इनकी प्रमाणिकता की जाँच कर सकता है।

vivo V29e

A070502T

प्रश्न सं०-26

एक अच्छे अन्वेषक अथवा साक्षात्कारकर्ता के क्या गुण होते है स्पष्ट करें?

उत्तर- साक्षात्कार की सफलता के लिए अच्छे साक्षात्कारकर्ता या सामाजिक अनुसंधानकर्ता का होना अनिवार्य है। एक सफल एवं अच्छे साक्षात्कारकर्ता में एक सफल एवं अच्छे सामाजिक अनुसंधानकर्ता के सभी प्रमुख गुण पाये जाने अनिवार्य है। यद्यपि इन गुणों के बारे में कोई सहमति नहीं है तथापि एक अच्छे साक्षात्कारकर्ता में निम्नलिखित गुणों का होना वांछनीय समझा जाता है—

साक्षात्कारकर्ता

- शारीरिक तथा व्यक्तिगत गुण
- बौद्धिक गुण
- व्यवहारात्मक गुण
- अध्ययन विषय से सम्बन्धित गुण
- क्रिया संबंधी गुण

- संवेदनशीलता
- धैर्य
- जिज्ञासा
- विवेकशीलता
- विषय में रुचि
- संगठनशक्ति

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:48

A070502T

प्रश्न सं० – 25

मूयिष्ठक (Mode) किसे कहते हैं, विवेचना करें?

उत्तर – मूयिष्ठक या बहुलक वह मूल्य है, जिसका प्रयोग समंकमाला में सबसे अधिक बार होता है अथवा जिसकी आवृत्ति सबसे अधिक होती है, इसलिए इसे बहुलक भी कहा जाता है।

$$\hat{x}\,(Z) = L + \frac{d_1}{d_1 + d_2} \times i$$

$\hat{x}$ या Z = मूयिष्ठक

L = मूयिष्ठक वर्ग की निम्न सीमा

d_1 = मूयिष्ठक वर्ग और उससे पहले वर्ग की बारम्बारताओं का अन्तर

d_2 = मूयिष्ठक वर्ग और उसके बाद वाले वर्ग की बारम्बारताओं का अन्तर

i = वर्गान्तर

(i) मूयिष्ठक बड़ी सरलता से, सामान्यतः निरीक्षण मात्र से समझा जा सकता है।

(ii) इसका प्रयोग विस्तृत क्षेत्र में किया जा सकता है।

(iii) इसे रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है।

(iv) यह लोकप्रियता, फैशन इत्यादि का अध्ययन करने में अति उपयोगी है।

(v) यह सर्वाधिक प्रतिनिधित्व मूल्य है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2023, 20:48

A070502T

प्रश्न सं०-24

मध्यका से आप क्या समझते है? स्पष्ट करे।

उत्तर— मध्यका (Median) समंक श्रेणी का वह पद है, जो समूह को दो समान भागों में इस प्रकार से विभक्त करता है कि एक भाग में समस्त मूल्य मध्यका से अधिक और दूसरे भाग में समस्त मूल्य मध्यका से कम हो।

$$\dot{x} = \text{size of } \left[\frac{n+1}{2}\right]^{th} \text{item}$$

$\dot{x}$ = मध्यका (Median)

n = पदों की संख्या

(i) इसका निर्धारण सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

(ii) यह निश्चित और विशुद्ध होती है, क्योंकि एक श्रेणी में एक ही मध्यका होती है।

(iii) मध्यका को ग्राफ, बिंदुरेखीय चित्रों द्वारा स्पष्टतया प्रदर्शित किया जा सकता है।

(iv) इसकी सहायता से गुणात्मक तथ्यों जैसे— स्वास्थ्य, निपुणता, क्षमता, ईमानदारी आदि में औसत बुद्धि भी निकाली जा सकती है।

(v) मध्यका पर सीमांत पदों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:48

A0705027

प्रश्न सं०-23

माध्य किसे कहते हैं? एक अच्छे माध्य की विशेषतायें बताइए!

उत्तर— सांख्यिकीय अर्थ में क्योंकि माध्य एक अवलोकन समूह के समस्त मूल्यों के प्रतिनिधित्व के रूप में प्रयुक्त एक मूल्य होता है, इसलिए एक माध्य को केन्द्रित मूल्य का माप माना जा सकता है।

माध्य (Mean)

- प्रतिनिधित्व
- निश्चितता
- सरलता
- व्यावहारिकता
- श्रेणी के सभी पदों पर आधारित
- निदर्शनों से कम प्रभावित

$$\bar{X} = \frac{\Sigma x}{N}$$

$\bar{X}$ = माध्य
Σ = योग का चिन्ह
x = पदों का मूल्य
N = पदों की संख्या

(i) संक्षिप्त एवं सूक्ष्म रूप प्रदान करना
(ii) तुलना
(iii) सम्बन्ध एवं अनुपात निर्धारण
(iv) सरल विश्लेषण
(v) भावी दिशा निर्धारण

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:48

A070502T

प्रश्न सं० — 22

गुणात्मक अनुसंधान से आप क्या समझते है?

उत्तर— गुणात्मक अनुसंधान (Qualitative Research) से अभिप्राय उस अनुसंधान से है, जिसका उद्देश्य किसी सामाजिक घटना के गुणों को उजागर करना होता है। यह एक प्रकार से वर्णनात्मक (Descriptive) अध्ययन होता है, जिस में सामाजिक घटना का वर्णन ज्यों का त्यों करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान में मात्राओं अथवा संख्याओं का प्रयोग नहीं किया जाता है।

गुणात्मक अनुसंधान की प्रमुख प्रविधियां निम्न है—

(i) सहभागी अवलोकन (Participant Observation)
(ii) नृजातिवर्णन (Ethnography)
(iii) साक्षात्कार निर्देशिका (Interview Guide)
(iv) वैयक्तिक अध्ययन (Case Study)
(v) अन्तर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)
(vi) जीवन इतिहास (Life History)
(vii) वंशावली (Geneology)

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:48

X070502T

प्रश्न सं०-21
जीवन इतिहास (Life History) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- "सीमित अर्थ में, जीवन इतिहास का अभिप्राय विस्तृत आत्मकथा से है। परन्तु व्यवहार में इसका सामान्य प्रयोग मोटे रूप से किसी भी जीवन संबंधी सामग्री के लिए किया जाता है"

जीवन इतिहास

- स्वतः लिखित आत्मकथा
- प्रेरित आत्म लेख
- संकलित जीवन इतिहास
- मौखिक जीवन इतिहास

(i) गहन सूक्ष्म अध्ययनों में
(ii) गुणात्मक तथ्यों के संकलन में
(iii) परिवर्तन एवं विकास के अध्ययन में
(iv) व्यक्तित्वों के अध्ययन में
(v) आंतरिक जीवन के अध्ययन में

"Thomas and Znaniecki" ने यूरोप एवं अमेरिका में रहने वाले "पोलिस कृषकों" के अपने अध्ययन में जीवन इतिहास पद्धति का प्रयोग कर यह प्रमाणित कर दिया कि इस प्रविधि द्वारा सामाजिक बनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया तथा परिवार एवं इसके सदस्यों के आंतरिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण सूचना एकत्र की जा सकती है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:47

A070502T

प्रश्न सं० - 20

सह संबंध विश्लेषण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - "जब दो या दो से अधिक समूहों, वर्गों या आंकड़ों की श्रेणियों के मध्य एक निश्चित सम्बन्ध होता है, तो उसे सह-सम्बन्ध कहते हैं"

सह-संबंध के प्रकार

- (i) धनात्मक और ऋणात्मक सह-संबंध
- (ii) रेखीय एवं वक्रीय सह-संबंध
- विक्षेप-चित्र विधि
- बिंदुरेखीय विधि
- सह संबंध सारणी
  - (i) कार्ल पियर्सन का सहसंबंध गुणांक
  - (ii) संगामी विचलन गुणांक
  - (iii) स्पियरमैन की श्रेणी अंतर विधि
  - (iv) न्यूनतम वर्ग विधि

कार्ल पियर्सन का सह संबंध गुणांक बीजगणितीय दृष्टि से उत्तम है क्योंकि यह श्रेणी के सभी पदों अथवा मूल्यों पर आधारित है। इससे सह संबंध की दिशा तथा मात्रा का अंकात्मक माप भी प्राप्त होता है। समांतर माध्य एवं प्रमाप विचलन पर आधारित होने के कारण इसमें पूर्ण शुद्धता पायी जाती है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:47

प्रश्न सं०-19

कॉम्ट के प्रत्यक्षवाद पर प्रकाश डालिये?

उत्तर- "प्रत्यक्षवाद का संबंध्य घटनाओं के निरीक्षण उनके विश्लेषण तथा उनके परस्पर संबंध्यों को विनियमित करने वाले नियमों की खोज करने से है"

कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद

(i) कुछ निश्चित सामाजिक नियम
(ii) यथार्थ ज्ञान
(iii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण
(iv) वैज्ञानिक कार्यप्रणाली
(v) प्रत्यक्ष न होने वाली घटनाओं से असम्बद्ध
(vi) धर्म एवं विज्ञान का समन्वय
(vii) सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन

- विज्ञानों का दर्शन
- वैज्ञानिक धर्म एवं नीतिशास्त्र
- प्रत्यक्ष राजनीति

- प्रत्यक्षवाद का सम्बंध्य वास्तविकता से है, काल्पनिक से नहीं, उपयोगी ज्ञान से है, न कि समस्त ज्ञान से है, इसका संबंध्य यथार्थ ज्ञान से है, न कि अस्पष्ट विचारों से, सावयवी सत्य से है, न कि शाश्वत सत्य से, सापेक्ष से है न कि निरपेक्ष से!

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:47

A0705027

प्रश्न सं० – 18

सांख्यिकी की समाजशास्त्रीय उपयोगिता पर प्रकाश डालिये?

उत्तर – " सांख्यिकी को संख्यात्मक समंकों के संग्रहण, प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं निर्वचन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है "

सांख्यिकी

- (i) वर्णनात्मक सांख्यिकी
- (ii) निष्कर्षात्मक सांख्यिकी

- समय श्रेणी
- स्थान श्रेणी
- परिस्थिति के अनुसार श्रेणी

- व्यक्तिगत श्रेणी
- खण्डित श्रेणी
- अखण्डित श्रेणी

(i) सरलता

(ii) संख्यात्मक स्वरूप

(iii) तुलना

(iv) सहसंबंध

(v) व्यक्तिगत ज्ञान एवं अनुभव में वृद्धि

(vi) नीति-निर्माण में पथ प्रदर्शन

(vii) भविष्य का पूर्वानुमान

(viii) सिद्धांतो एवं उपकल्पनाओं की जांच करना

(ix) समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करना

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba...

A0705027

प्रश्न सं०-17

अन्तर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— "अन्तर्वस्तु विश्लेषण संचार की अभिव्यक्ति अन्तर्वस्तु के वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध तथा गणनात्मक विवरण हेतु प्रयोग की जाने वाली एक अनुसंधान प्रविधि है"

अन्तर्वस्तु विश्लेषण

(i) चिन्ह गणना	– समस्या निर्माण
(ii) चिन्हों का एक पक्षीय वर्गीकरण	– जनसंचार साधनों का चयन
(iii) मद/भिन्नमार्ग विश्लेषण	– विश्लेषण की इकाई का चयन
(iv) विषय/प्रसंग विश्लेषण	– समस्या से संबंधित सामग्री का चयन
(v) संरचनात्मक विश्लेषण	– सामग्री का विश्लेषण
(vi) प्रचार विश्लेषण	– प्रतिवेदन

(i) संचार सामग्री की प्रकृति का विवरण प्रस्तुत करना
(ii) वैश्विक भिन्नताओं को प्रस्तुत करना
(iii) विकास क्रम का पता लगाना
(iv) विभिन्न संचार साधनों की तुलना करना
(v) संचार वस्तु में उद्देश्यों के विरोधी तथ्यों की छानबीन करना

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:47

प्रश्न सं०-16

वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी) विधि से आप क्या समझते हैं?

उत्तर — "वैयक्तिक अध्ययन एक गुणात्मक विवेचना का रूप है जिसमें किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा संस्था का अत्यंत सावधानी तथा एवं अवलोकन किया जाता है"

वैयक्तिक अध्ययन विधि

- अध्ययन की विशेष इकाई
- गुणात्मक अध्ययन
- गहन अध्ययन
- कारकों का अध्ययन
- अनेक स्रोतों तथा प्रविधियों का प्रयोग

(i) व्यक्ति का अध्ययन

(ii) समूह अथवा समुदाय का अध्ययन

(i) अति गहन अध्ययन

(ii) महत्वपूर्ण उपकल्पनाओं एवं प्रपत्रों का साध्यन

(iii) इकाइयों का वर्गीकरण व विभाजन

(iv) व्यक्तिगत भावनाओं एवं मनोवृत्तियों का अध्ययन

(v) सामग्री की सम्पूर्णता

(vi) विभिन्न अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग

(vii) प्रारम्भिक अध्ययन में उपयोग

20705027

प्रश्न सं०-15

सहभागी अवलोकन की स्पष्ट व्याख्या करे ?

उत्तर- "सहभागी अवलोकन तथ्य संकलन की एक विधि नहीं है, बल्कि कई विधियों का सम्मिलित रूप है"

सहभागी अवलोकन के गुण निम्नलिखित है -

(i) पूर्ण रूप से गहन अध्ययन
(ii) स्वाभाविक स्थिति
(iii) समग्रात्मक दृष्टिकोण
(iv) अंतर्दृष्टि प्रदान करना

सहभागी अवलोकन की विशेषतायें है -

(i) यह अनियंत्रित, असंरचित एवं मुक्त विधि है।
(ii) सहभागी अवलोकन का उद्देश्य स्वाभाविक स्थिति में गहन एवं अंदरूनी सूचनायें प्राप्त करना है।
(iii) अनुसंधानकर्ता, अस्थायी सहभागिक की या स्वीकृत सदस्य की भूमिका निभाता है।
(iv) तथ्य संकलन की दृष्टि से यह कई पद्धतियों व विधियों का मिश्रित रूप बन जाता है।

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

A0705027

प्रश्न सं० - 14

साक्षात्कार विधि का वर्णन करें एवं विशेषताओं को उल्लेख करें ?

उत्तर - "साक्षात्कार सम्मुख वार्तालाप विनिमय है, जिसमें एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से सूचना प्राप्त करता है"

साक्षात्कार विधि

(i) उपकल्पना का निर्माण एवं समस्या का प्रारम्भिक अन्वेषण
(ii) प्राथमिक तथ्यों का संकलन
(iii) साक्षात्कार का उद्देश्य पुनरीक्षण है
(iv) साक्षात्कार एक पूरक विधि है

- निदानात्मक साक्षात्कार
- उपचारात्मक साक्षात्कार
- अनुसंधान साक्षात्कार
- औपचारिक साक्षात्कार
- अनौपचारिक साक्षात्कार

- साक्षात्कार का प्रारम्भ एवं औपचारिकताएँ
- साक्षात्कार की प्रारम्भिक तैयारी
- उत्तरदाता से सम्पर्क एवं पूर्व-नियुक्ति
- प्रश्न पूछना
- उपयुक्त एवं सारगर्भित उत्तरों की प्राप्ति
- आलेखन
- समापन

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

A070502T

प्रश्न सं०-13

अनुसूची (Schedule) क्या है? इसका वर्णन करें।

उत्तर- "अनुसूची प्राथमिक तथ्यों को संकलित करने की एक ऐसी विधि है, जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली तीनों की ही विशेषताओं एवं गुणों का समन्वय पाया जाता है"

अनुसूची विधि

- अवलोकन अनुसूची	(i) समस्या का ज्ञान होना जरूरी
- मूल्यांकन अनुसूची	(ii) प्रश्नों का निर्माण करना
- प्रलेख अनुसूची	(iii) प्रश्नों की भाषा एवं क्रम
- संस्था- सर्वेक्षण अनुसूची	(iv) प्रश्नों की वैधता का परीक्षण
	(v) अनुसूची की बाह्य आकृति एवं अन्तर्वस्तु

(i) व्यक्तिगत सम्पर्क
(ii) ठोस एवं वास्तविक सूचनाओं की जानकारी
(iii) अवलोकन शक्ति का विकास
(iv) प्रमाणिक एवं लेखबद्ध तथ्यों की प्राप्ति
(v) स्पष्ट उत्तर प्राप्त करने की सुविधा
(vi) अनावश्यक सूचनाओं से बचाव
(vii) उत्तरों के सत्यापन की सुविधा

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

A070502T

प्रश्न सं० —12

प्रश्नावली विधि से आप क्या समझते है?

उत्तर— "प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रेषित की गयी प्रश्नों की एक सूची है" — बोगार्डस

प्रश्नावली विधि

(i) तथ्य संबंधी प्रश्नावली	- अनुसंधान समस्या की जानकारी होनी चाहिये
(ii) मत एवं मनोवृत्ति संबंधी प्रश्नावली	- सहयोगी तथा विशेषज्ञों से परामर्श करना चाहिये
(iii) संरचित प्रश्नावली	- प्रश्नावली का पूर्व-परीक्षण
(iv) असंरचित प्रश्नावली	- प्रश्नावली की छपाई (मुद्रण)

(i) विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
(ii) सूचना की शीघ्र प्राप्ति
(iii) प्रमाणित एवं स्वतंत्र सूचनाये
(iv) प्रश्नावली भरने की सुविधा
(v) सरल प्रक्रिया
(vi) पुनरावृत्ति सम्भव
(vii) कम खर्चीली
(viii) समय की बचत
(ix) सरल सांख्यिकी विश्लेषण

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

A0705027

प्रश्न सं०-11

आंकड़ों के संग्रह में अवलोकन विधि का क्या महत्व है?

उत्तर— "विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है और इसको अंतिम रूप से प्रमाणीकरण के लिए निरीक्षण पर लौटना पड़ता है"

— गुडे / हट

अवलोकन विधि

- मानव इंद्रियों का उपयोग
- प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह
- प्रत्यक्ष एवं सूक्ष्म अध्ययन
- विश्वसनीय सूचना स्रोत
- सामूहिक व्यवहार का अध्ययन
- कार्य-कारण संबंधों का पता लगाना
- उपकल्पना का निर्माण

- क्षेत्र अवलोकन
- प्रयोगशाला अवलोकन
- सहभागी अवलोकन
- असहभागी अवलोकन
- नियंत्रित अवलोकन
- अनियंत्रित अवलोकन

(i) मानवीय क्रियाओं एवं व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन
(ii) घटनाओं का तात्कालिक अध्ययन
(iii) गहन सूचना प्राप्त करने में सहायक
(iv) अन्वेषणात्मक एवं निर्णयात्मक स्थिति में उपयोगी
(v) अधिक विश्वसनीय

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

A070502T

प्रश्न सं० - 10

उपकल्पना या प्राक्कल्पना क्या है? इसको स्पष्ट करें।

उत्तर—
उपकल्पना (Hypotheses) "एक कार्यवाहक विचार जो उपयोगी खोज का आधार बनता है, कार्यवाहक उपकल्पना माना जाता है।"

उपकल्पना

- अवधारणात्मक स्पष्टता
- विशिष्टता एवं यथार्थता
- आनुभाविक संदर्भ
- सरलता
- उपलब्ध प्रविधियों से संबंधित

(i) सामान्य संस्कृति
(ii) वैज्ञानिक सिद्धांत
(iii) उपमाएँ / समरूपताएँ
(iv) व्यक्तिगत अनुभव

(i) अनुसंधान की दिशा तथा उद्देश्य स्पष्ट करना
(ii) अध्ययन में निश्चितता लाना
(iii) उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक
(iv) निष्कर्ष निकालने में उपयोगी
(v) सिद्धांत निर्माण में सहायक

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:46

प्रश्न सं० – 9

निदर्शन या प्रतिदर्श (Sampling) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – "एक निदर्शन सम्पूर्ण समूह का न्यूनतम प्रतिनिधि है"

निदर्शन

- समग्र का प्रतिनिधि
- पर्याप्त आकार
- निष्पक्षता
- तार्किक
- साधनों के अनुरूप
- उद्देश्यों के अनुकूल

सम्भावित निदर्शन

(i) लाटरी पद्धति
(ii) ग्रिडपद्धति
(iii) दैव निदर्शन
(iv) शुद्ध निदर्शन
(v) पुनरावृत्ति निदर्शन
(vi) क्रमबद्ध निदर्शन

असम्भावित निदर्शन

(i) कोटा निदर्शन
(ii) उद्देश्यपूर्ण निदर्शन
(iii) आकस्मिक निदर्शन

(i) प्रतिनिधि इकाइयों का अध्ययन
(ii) विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
(iii) प्राप्त सूचनाओं का निरीक्षण व पुनः परीक्षण
(iv) निर्वाचित इकाइयों का गहन अध्ययन
(v) सूचनाओं की प्राप्ति में सुविधा

vivo V29e
Sep 6, 2026, 20:46

A070502T

प्रश्न सं०-8

अनुसंधान प्रारूप (Research Design) से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें?

उत्तर – "अनुसंधान प्रारूप आंकड़ों के संकलन तथा विश्लेषण की दशाओं की उस व्यवस्था को कहते हैं जिसका लक्ष्य अनुसंधान के उद्देश्यों की प्रासंगिकता तथा कार्यविधि की मितव्ययिता का समन्वय करना है"

अनुसंधान प्रारूप

- निदर्शन प्रारूप
- अवलोकनात्मक प्रारूप
- सांख्यिकी प्रारूप
- संचालन प्रारूप

- लचीली
- उपयुक्त
- कार्यकुशल
- मितव्ययी

- अन्वेषणात्मक प्रारूप
- वर्णनात्मक प्रारूप
- निदानात्मक प्रारूप
- प्रायोगिक प्रारूप

(i) शोध संबंधी प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना

(ii) प्रसरण से उत्पन्न दोषों को नियंत्रित करना जिससे वे उत्तर विश्वसनीय एवं वैध हो सकें।

vivo V29e
Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:45

प्रश्न सं० - 7

सामाजिक सर्वेक्षण की विशेषताओं का उल्लेख करें?

उत्तर – सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक घटनाओं के व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन की एक प्रणाली है।

सामाजिक सर्वेक्षण

- जनगणना सर्वेक्षण
- निदर्शन सर्वेक्षण

- जनमत सर्वेक्षण
- बाजार अनुसंधान सर्वेक्षण

- पैनल सर्वेक्षण
- डाक प्रश्नावली सर्वेक्षण
- टेलीफोन सर्वेक्षण
- नियंत्रित अवलोकन सर्वेक्षण

(i) तात्कालिक समस्याओं से संबन्धित
(ii) निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
(iii) रचनात्मक आधार
(iv) वैज्ञानिक प्रक्रिया
(v) वस्तुनिष्ठ रूप में तथ्यों का संकलन
(vi) सहयोगात्मक प्रक्रिया
(vii) परिमाणात्मक प्रकृति

vivo V29e
…pur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:45

20705027

प्रश्न सं०-6

गणनात्मक विधियों (Quantitative Method) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- जो विधियाँ संख्याओं एवं माप को महत्व देती है, उन्हें हम गणनात्मक विधियाँ कहते हैं।

गणनात्मक विधियाँ

- तार्किक प्रमाणीकरण
- पंचों की राय
- परिचित समूह
- स्वतंत्र मापदण्ड

सामाजिक सर्वेक्षण
- प्रश्नावली
- अनुसूची
- साक्षात्कार

- वर्णनात्मक अध्ययन
- प्रायोगिक अध्ययन

(i) विभिन्न चरों में संबंधों का यथार्थ मापन संभव है।

(ii) सामाजिक व्यवहार एवं घटनाओं में कारण-प्रभाव संबंधों की स्थापना सम्भव है।

(iii) घटनाओं में द्रव्यों के समान समरूपताये पाई जाती है।

(iv) पैमानों के निर्माण द्वारा घटनाओं के विभिन्न अंगो या पक्षों में तारतम्यता को ज्ञात किया जा सकता है।

vivo V29e
Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:45

A0705021

प्रश्न सं० - 5

तथ्य (Statements) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - दुर्खीम के अनुसार "समाजशास्त्र तथ्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है" और इन्होंने तथ्य की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है - बाह्यता, बाध्यता व सामान्यता।

तथ्य

- प्रकृति के आधार पर
  - गुणात्मक तथ्य
  - परिमाणात्मक तथ्य
- मौलिकता के आधार पर
  - प्राथमिक तथ्य
  - द्वितीयक तथ्य

तथ्य की विशेषतायें -

(i) तथ्य एक ऐसी घटना है, जो वास्तविक रूप में घटित होती है।

(ii) तथ्य मूर्त एवं अमूर्त दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

(iii) तथ्य का निरीक्षण, परीक्षण, अवलोकन एवं अनुभव संभव होता है।

(iv) तथ्य के विषय में सभी मत एक समान होता है।

(v) तथ्य किसी घटना या प्रक्रिया की पूर्ण व्याख्या नहीं करता बल्कि विभिन्न तथ्य मिलकर किसी घटना या प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:44

२०७०५०२१

प्रश्न सं०-4

व्यक्तिनिष्ठता या वैयक्तिकता (Subjectivity) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- वैज्ञानिक अध्ययन में पूर्ण वस्तुनिष्ठता नहीं आ पाती है। किसी अनुसंधानकर्ता द्वारा सामग्री एकत्र करते समय अपने दृष्टिकोण से देखकर घटनाओं का वर्णन अपने अनुसार करना ही व्यक्तिनिष्ठता है।

सामाजिक अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता के स्रोत-

(i) शोधकर्ता की व्यक्तिगत मत
(ii) सूचनाओं की अभिमति
(iii) न्यायदर्श में पक्षपात
(iv) तथ्य प्रस्तुतीकरण की दोषपूर्ण प्रक्रिया
(v) दोषपूर्ण प्रश्नावलियाँ
(vi) वातावरण का प्रभाव

vivo V29e

A070502T

प्रश्न सं०-3

वस्तुनिष्ठता या उद्देश्यपरकता (Objectivity) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर -

"निष्पक्षता के साथ घटना का परीक्षण ही वस्तुनिष्ठता है"

-ए. डब्ल्यू. ग्रीन

दुर्खीम कहते हैं कि सामाजिक अनुसंधानकर्ता समाज का वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर सकता है और इन्होंने आत्महत्या, श्रमविभाजन एवं धर्म की समाज में उपयोगिता के आधार पर अनुसंधान भी किये हैं।

वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधन —

(i) प्रयोग सिद्ध पद्धतियां

(ii) सांख्यिकी मापन

(iii) पारिभाषिक शब्दों एवं धारणाओं का प्रमाणीकरण

(iv) यान्त्रिक साधनों का प्रयोग

(v) दैव निदर्शन का प्रयोग

(vi) प्रश्नावली और अनुसूची का प्रयोग

(vii) सामूहिक अनुसंधान

vivo V29e
Jai Shree Shyam Baba(Sharad Tiwari) Kanpur Uttar Pradesh Sep 6, 2026, 20:44

A070502T

प्रश्न सं०-2
वैज्ञानिक पद्धति से आप क्या समझते है, इसकी विशेषताओं का उल्लेख करे ?

उत्तर— "समस्त विज्ञान की एकता केवल उसकी पद्धति में है न कि उसकी विषय सामग्री में" — कार्ल पियर्सन

(i) समस्या का चुनाव
(ii) उपकल्पना या परिकल्पना
(iii) चरों का चयन
(iv) निदर्शन या प्रतिचयन
(v) सामग्री का संकलन
(vi) सामग्री का विश्लेषण
(vii) प्रतिवेदन या रिपोर्ट तैयार करना

वैज्ञानिक पद्धति की विशेषतायें —

(i) कार्य-करण संबंधों की व्याख्या होती है।
(ii) सार्वभौमिक सिद्धांतों की स्थापना की जाती है।
(iii) इससे प्राप्त निष्कर्ष सार्वभौमिक होते है।
(iv) इसके माध्यम से सामाजिक समस्याओं का निदान किया जा सकता है।
(v) इसके अध्ययन की प्रकृति वस्तुनिष्ठ होती है।

vivo V29e

A070502T

प्रश्न सं०-1

सामाजिक अनुसंधान क्या है? इस की व्याख्या करे?

उत्तर- मनुष्य सदैव अपने चारों ओर के वातावरण के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य की यही जिज्ञासु प्रवृत्ति ही अनुसंधान का मूल आधार है।

(i) सामाजिक संबंधों, घटनाओं, तथ्यों व प्रक्रियाओं की व्याख्या करना

(ii) सामाजिक संबंधों के बारे में नवीन तथ्यों की खोज करना

(iii) सामाजिक समस्याओं की प्रकृति एवं कारणों का अध्ययन करना

(iv) वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग

(v) प्राचीन तथ्यों का पुनर्परीक्षण व सुधार करना

(vi) सांख्यिकी विश्लेषण का प्रयोग

(vii) तथ्यों व प्रमाणों का विश्लेषण और विवेचन

Political Science

vivo V29e